International Journal of Sanskrit Research 2021; 7(1): 511-514

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2021; 7(1): 511-514
© 2021 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 14-11-2020
Accepted: 27-12-2020

**डॉ. प्रीति पाण्डेय**
शोध छात्रा, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

**Corresponding Author:**
**डा. प्रीति पाण्डेय**
शोध छात्रा, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

# भवभूति के राम

**डॉ. प्रीति पाण्डेय**

**सारांश**
संस्कृत साहित्य में नायक का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। श्री राम का चरित्र संस्कृत के अनेक महाकाव्यों, नाटकों आदि का प्रमुख वर्ण्य विषय रहा है। "जहां-जहा राम का चरित्र वर्णित है वहां उनके दो, चार गुण तो एकरूपता से सर्वत्र वर्णित हुए है जैसे- मर्यादा पालन धीरता गंभीरता और सुशीलता ।फिर भी उल्लेखनीय है कि प्रत्येक नाटककार ने उनके चरित्र की केवल यही पक्ष वर्णित किए हो या सभी नाटक कारों के राम का एक सा ही व्यक्तित्व लगता हो ऐसी बात नहीं है। प्रमुख नाटककारों ने उनके चरित्र मेंये सभी गुण बतलाते हुए भी उन्हें इस प्रकार विविध आयाम दिए हैं कि प्रत्येक नाटककार केवल वर्ण्य 'राम' का एक अनूठा और निराला ही चित्र उभरता है"।[1] ऐसे ही नाटक कारों में महर्षि कालिदास के अनंतर महाकवि भवभूति को श्लाघनीय स्थान प्राप्त है। वे अत्यंत ही प्रौढ़ गंभीर और अभिजात नाटककार हैं। उनके तीन नाटकों में दो नाटक महावीर चरितम तथा उत्तररामचरितम् के नायक" श्री राम" है। महावीर चरितम् में राम के पूर्व चरित अर्थात विश्वामित्र के यज्ञ से लेकर राम राज्याभिषेक तक की कथा है तथा उत्तररामचरितम् में राम के उत्तर चरित अर्थात् सीता परित्याग से लेकर लव कुश तथा सीता के स्वीकार तक की घटना का वर्णन है। रामायण के विपरीत इन्होंने उत्तररामचरितम् को नाट्य व्यापार के अनुरूप सुखांत बनाया है।

**मूल शब्दः** भवभूति, संस्कृत, नाटककार, नायक, प्रतिमूर्ति

## प्रस्तावना
इन दोनों नाटकों में नायक राम का चरित्र बिल्कुल ही विलक्षण तथा निराला है। महावीर चरितम के राम 'वीर रस'से ओतप्रोत हैं तो उत्तररामचरितम् के राम 'करुण रस' की जीती जागती प्रतिमूर्ति। उदास और धीर गंभीर होने पर भी उनका विलाप पत्थर को पिघला देता है.

**अपि ग्रावा रोदित्यपि दलतिवज्रस्य हृदयम्।।[2]**
लोकानुरंजनके लिए ही राम अपनी जानकी के निर्वासन का दारूणिक निर्णय लेते हैं और पंचवटी में सीता के साथ बिताए दिनों को याद करकेविह्वल हो जाते हैं और कारुणिक विलाप करते हैं। राम के प्रलाप मूर्छा आदि से सीता को यह आश्वासन मिलता है कि राम उन्हें कितना आदर देते हैं। भवभूति ने सीता निर्वासन के नाट्य व्यापारोंसे राम को दोषमुक्त करने का प्रशंसनीय प्रयास किया है। नाटक के अंत में लोकानुरोध पर ही वे सीता को लव कुश के साथ स्वीकारते हैं। भवभूति ने अपने नायक राम में एक सच्चे स्नेही पति का ऐसा विलक्षण चित्रण किया है जिसकी समता विश्व साहित्य में मिलना दुर्लभ है।
युग युगांतर से भारतीय जनमानस के अंतः पटल पर मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में प्रतिष्ठित श्री राम की कथा का विवरण रामायण में मिलता है। यह काव्य का आदि रूप है जिसकी रचना आदि कवि महर्षि वाल्मीकि ने की है। राम के चरित्र का वर्णन होने से यह धर्म ग्रंथ और आचरण के मार्ग दर्शक ग्रंथ के रूप में प्रतिष्ठित है। परवर्ती अनेक कवियों नाटककारों तथा लेखकों ने रामायण को अपना उपजीव्य बनाया है तथा इसकी शैली का भी अनुसरण किया है। रामायण की शाश्वत शक्ति स्थिरता और अमरता का संकेत स्वयं इस ग्रंथ में ही किया गया है.

यावत्स्थास्यन्ति गिरयः सरितस्श्च महीतले।
तावद् रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति।[3]

यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि वाल्मीकि के पूर्व वैदिक रचनाऐं पद्यात्मक और छन्दोमयी होने पर भी केवल पूजा. अर्चना धर्म.यज्ञ स्तुति. आराधना और आध्यात्म के सन्देशों से ही युक्त थीं। जन.भावना; मानव.चेतना और आचरण

से उनका सम्बन्ध बिल्कुल भी नहीं था। बाल्मीकि के अन्तःकरण मे क्रांतिकारी काव्य रचना का आंदोलन चल रहा था कि तमसा नदी के किनारे निषाद द्वारा विद्ध क्रौञ्च आर्तनादोत्थ कवि का शोक श्लोक के रूप में फूट पड़ा।

श्लोकत्वमापद्यत यस्य शोकः।[4]

यही कालांतर में काव्य की आत्मा के रूप में प्रस्फुटित हुआ है। इसे ही भवभूति ने शब्दब्रह्मविवर्त कहा और यही काव्य जन. भावना का स्रोत बनकर लोक में नई धारा का प्रवर्तन करने मे समर्थ हुआ। वाल्मीकि की आकांक्षा थी कि उनका काव्य अमर हो जन. जीवन से साक्षात् सम्बद्ध हो। इन सभी लक्ष्यों की पूर्ति के लिए मर्यादा पुरुषोत्तम् श्रीराम के अतिरिक्त और कोई नायक उन्हें समर्थ न लगा।[5]

कालांतर में इसी नायक ने अपने सफल नायकत्व से अनेक कवियों के हृदय को ओत प्रोत करते हुए अपने नायकत्व को तथा कवियों के कवित्व को कालजयित करते हुए अमर बनाया जिनसे द्रवित रसोद्गार का आस्वादन अद्यतन पीढ़ी पूर्ण मनोयोग से करती है। राम का चरित्र बड़ा ही उदात्त आदर्श तथा प्रख्यात परंपरा के सर्वथा अनुरूप है। रामराज्य का आदर्श रूप अपने वैभव के साथ यहां देख पड़ता है। राम आदर्श राजा हैं। उनका व्रत ही प्रकृति रंजन है। स्नेह दया सौख्य यहां तक की पवित्र.चरित्रा जनक नंदिनी को भी छोड़ते हुए राम को व्यथा नहीं है।. [6]

स्नेहा ध्यान च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा।।[7]

महाकवि भवभूति ने अपने तीन नाटकों.;१ मालती माधवम्; २ महावीर चरितम्; ३ उत्तररामचरितम् में से दो नाटक महावीर चरितम तथा उत्तररामचरितम् के उत्स के रूप में रामायण का ग्रहण किया तथा नायक के रूप में मर्यादा पुरुषोत्तम् श्री राम का वरण किया।

महावीर चरितम् रामायण के ६ कांडों बालकांड से युद्ध कांड तक आश्रित रामकथा का ७ अंकों में प्रदर्शन करने वाला नाटक है। इस नाटक में सीता. विवाह से लेकर राम.राज्याभिषेक तक की घटनाओं का वर्णन है। महाकवि भवभूति से पूर्व रामायण के इतने वृहद घटनाक्रमों को किसी ने भी नाटक के रूप में प्रस्तुत नहीं किया था। ७ अंको में राम कथा के प्रसंग तथा घटनाक्रम ऐसे कसे हुए हैं जिनसे पाठक या दर्शक अपने आप को आबद्ध पाते हैं जैसे. विश्वामित्र के आश्रम में राम. लक्ष्मण का आगमन ताटका. सुबाहु आदि महाबलशाली राक्षसों का वध राम. सीता विवाह परशुराम प्रसंग रामवनगमन खर दूषण का वध पंचवटी प्रसंग सीता हरण सुग्रीव मैत्री तथा बाली.वध सीतान्वेषण राम.रावण युद्ध रावण वध राम का अयोध्या लौटना और राज्याभिषेक। महाकवि भवभूति ने अपने नाट्य कौशल से इन घटनाओं में नाट्य दृष्टि से आवश्यक परिवर्तन करके उन्हें एक सूत्र में पिरोया है। रामकथा के पूर्व परिचितों को यह परिवर्तन असंगत लग सकते हैं जैसे. विश्वामित्र के आश्रम में राम.सीता और लक्ष्मण. उर्मिला का कुशध्वज द्वारा भेंट कराना रावण के दूत का रावण द्वारा सीता से विवाह की इच्छा का संदेश लाना शिव धनुष का भंग भी वही होना यह सारे प्रसंग भवभूति की मौलिक कल्पनाओं के हृदयस्पर्शी अंग हैं।

महाकवि भवभूति के राम महावीर हैं बाल्यकाल से ही उनके वीरत्व का सहज अनुमान लगाकर ही महर्षि विश्वामित्र उन्हें अपने यज्ञ की रक्षा के योग्य समझकर दशरथ से उनके पुत्रों श्री राम और लक्ष्मण को मांग कर अपने आश्रम ले जाते हैं। राम स्वयं तो महावीर हैं ही साथ ही वे अन्य वीरों की भी प्रशंसा करते हैं रावण **द्वारा** सीता से विवाह के लिए पुरोहित माल्यवान को राजा जनक से याचना के लिए भेजने पर लक्ष्मण को अमर्ष होता है किंतु स्वयं राम उसकी वीरता की प्रशंसा करते हैं।

यद्विद्वानपि तादृशेऽप्यभिजने धर्म्यात्पथोऽपि च्युतः
किं ब्रूमोऽत्र तदन्यदेव न वसन्त्येकत्र सर्वे गुणाः।
लीलानिर्जितषण्मुखाद्भगवतःश्रीजामदग्न्यादृते
निर्विघ्नप्रतिपन्नविश्वविजयो वीरस्तु कस्तादृशः।।[8]

महावीर राम में वीरता के साथ ही साथ दयालुता भी है विश्वामित्र द्वारा ताड़का वध का आदेश देने पर भी वह स्त्री समझ कर उस पर प्रहार करने में संकोच का अनुभव करते है।[9] शिव धनुष भंग भी वे सहजता के साथ ही कर देते हैं। धनुष भंग से क्रोधित परशुराम भी राम के अतुलित तेज प्रताप से घर्षित हो जाते हैं। महावीर राम एक श्रेष्ठ कर्तव्य पालक के रूप में भी दृष्टिगोचर होते हैं। मंथरा के शरीर में प्रविष्ट शूर्पणखा शूर्पणखा राजा दशरथ के द्वारा कैकेयी को दिए गए वरदानों की चर्चा करती है जिसमें प्रथम राम लक्ष्मण और सीता को तत्काल वनवास तथा द्वितीय भारत का राज्याभिषेक। कैकेयी के इस संदेश को स्वयं राम राजा दशरथ के पास ले जाते हैं और यत्न पूर्वक उनसे अनुमति प्राप्त कर लेते हैं.

सत्यसंधाः स्थ यदि वा रामो वा यदि वः प्रियः।
तत्प्रसीदत मे माता पूर्णकामास्तु मध्यमा।।[10]

वनवास प्रसंग में सीता हरण के बाद राम कबन्ध आदि राक्षसों का विनाश करते हुए बाली और रावण की मित्रता का संवाद भी सुनते हैं तथा अप्रत्यक्ष रूप से स्वयं राम पराक्रमी बाली का वध करते हैं इस प्रसंग में महाकवि भवभूति राम की महा वीरता को अक्षुण्ण रखते है।[11] महावीर राम ने अपने पराक्रम से ही समुद्र को भयभीत कर वानरों की सहायता से सेतु बांध कर लंका रोहण करते हैं तथा अत्यंत वीरता के साथ रावण तथा मेघनाथ का वध करते हैं। परंपरागत राम कथा में किंचित परिवर्तन करते हुए उनके आदर्श चरित्र की रक्षा नाटककार ने बड़ी सावधानी और सतर्कता से की है। वह परमवीर निर्भीक साहसी और गुणग्राही है। अपने शत्रु की भी वे प्रशंसा करते हैं। वह धर्म परायण है तथा अपने गुरुजनों के प्रति उनमें अपार भक्ति है अपार सहृदयता है तथा वे सभी सद्गुणों के आगार हैं।

भवभूति का अंतिम नाटक उत्तररामचरितम् उनकी सर्वोत्तम रूपक रचना है इसी को लक्ष्य करके सहृदय समीक्षकों ने लिखा है. उत्तरेरामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते। इसके सात अंको में रामायण के उत्तरार्ध की कथा वर्णित है। गृहस्थ जीवन तथा प्रेम का चरम परिपाक जितना इस नाटक में हुआ है उतना संस्कृत के अन्य किसी नाटक में नहीं। भवभूति के गंभीर स्वभाव का उत्कर्ष इसमें प्राप्त होता है। कालिदास आदि कवियों ने स्वच्छंद प्रणय को कर्तव्यनिष्ठा के कठोर नियम में नियंत्रित करने के बाद भवभूति ने उसमें जो उत्कर्ष तथा शालीनता ला दी है वह इस नाटक की महती विशेषता है। संपूर्ण रूपक में राम का चरित्र शील सत्य और शक्ति का उत्स बनकर प्रकाशित हुआ है। राम अलौकिक राम न होकर लौकिक राम के रूप में उद्दीप्त हुए हैं। राम के उत्तर जीवन का करुण प्रसंग किसे ज्ञात नहीं है। युगो .युगो से अनवरत चले आते हुए इस कथानक में समुचित सुधार करके भवभूति ने न केवल इसे नाट्य व्यापार के योग्य बनाया है अपितु सीता. निर्वासन की परिस्थितियों का अभिनव.संयोजन करके राम को कलंक मुक्त करने का प्रशंसनीय प्रयास किया है ऐसा ही प्रयास वे बाली वध के प्रसंग में महावीर चरित में भी कर चुके हैं इसलिए कहा गया है कि सीता. निर्वासन के साहित्यिक समर्थन का प्रयास इस रूपक के माध्यम से किया गया है।

राम लोक आराधना के लिए स्नेह दया और सुख की मूर्ति अपनी प्रियतमा सीता का परित्याग कर देते हैं किंतु अंतः करण की असह्य ज्वाला से दग्ध होते रहते हैं। उनके समस्त कार्य व्यापार केवल कर्तव्य पालन के लिए होते हैं। राम का जीवन एकमात्र करुण रस के विभिन्न फलकों पर अन्यान्य रसों के चित्र अंकित करता है.

एको रसः करुण एवं निमित्तभेदाद्।
भिन्नः पृथक पृथगिवाश्रयते विवर्तान्।।[12]

सीता निर्वासन की परिस्थितियों में राम का उत्तरदायित्व उचित परिप्रेक्ष्य में दिखाकर कवि ने उनके चरित्र को दोष मुक्त करते हुए उन्हें एकांत निर्जन वन में अपनी भावना के प्रकाशन का भी अवसर दिया है। करुण रस प्रधान नाटक में भी आशावाद की सुखद किरणों की झलक यत्र.तत्र देते हुए कवि ने रामायण की दुखान्त कथा के विपरीत नाटक को सुखांत बनाया है।
भवभूति के राम का करुण और प्रजा पालक रूप एक पत्नी व्रता पति का रूप तथा गुण हृदयार्वर्जक है। चित्र दर्शन के क्रम में कारुणिक प्रसंग आने पर राम रोने लगते हैं किसी प्रकार लक्ष्मण के आश्वासन देने पर वे शांत होते हैं फिर भी राम के आंसुओं की धारा जर्जर कण होकर पृथ्वी पर गिरती है यदि आंसू रोक भी लिए जाते हैं तो शोकावेग फड़कते होठों और नासापुटों से अभिव्यक्त होता है.[13]

अयं तावदबाष्पस्त्रुटित इव मुक्तामणिसरो
विसर्पन्धाराभिर्लुठति धरणीं जर्जरकणः।
निरुद्धोऽयावेगः स्फुरदधरनासापुटतया
परेषामुन्नेयो भवति चिरमाध्मातहृदयः।।[14]

जानकी के भूतपूर्व हरण का प्रसंग भी उभरे हुए घाव के समान पीड़ा देता है।[15] सीता वियोग के अनंतर आए हुए वर्षा काल में बिताए दिनों की स्मृति भी सह्य नहीं लगता है पुनः जानकी वियोग आ पहुंचा है। गुप्तचर दुर्मुख के द्वारा दी गई सीता के लोकापवाद विषयक सूचना के बाद तो राम की वेदना की धारा अंतर्मुखी हो जाती है। लक्ष्मण तक को पता नहीं लगता। पत्नी जानकी को वन में भेजने का निर्णय प्रजा पालक के रूप में लेना पड़ता है पति या प्रेमी के रूप में नहीं। इस द्वैधीभाव के शिलाखंड से वे पिसते रहते हैं तथा स्वयं को क्रूर चांडाल मानते हैं। शीतल चंदन वृक्ष के भ्रम में उनकी प्रिया ने आज तक प्राणाघातक विष वृक्ष का ही आश्रय ले रखा था।

अपूर्वकर्मचाण्डालमयि मुग्धे! विमुञ्च माम्।
श्रितासि चन्दनभ्रान्त्या दुर्विपाकं विषद्रुमम्।।[16]

सीता को त्यागते ही राम के जीवन का प्रयोजन समाप्त हो गया जगत उनके लिए जीर्णारण्य .सा निर्जन हो गया। सीता की विनम्रता और राम की उनके प्रति तथा उनकी राम के प्रति प्रीति को तृतीय अंक में कवि ने पराकाष्ठा पर पहुंचा दिया है। संपूर्ण तृतीय अंक राम के कारुणिक प्रलापों से भरा है। वह पूर्ण विश्वास से कहते हैं कि राक्षसों ने सीता का सुंदर शरीर खा लिया होगा। 17 इसलिए उनका अंतः करण व्यथित है और सीता को बार.बार याद करके मूर्छित होते हैं। उनका शोक इतना गहरा है कि उसे सामान्यतः प्रकट भी नहीं किया जा सकता वह पुटपाक की प्रक्रिया के रूप में आंतरिक दाह के समान है अंतरगूढ. घनव्यथा है।

अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः
पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः।[18]

जब वासंती उनसे धैर्य धारण करने को कहती हैं तो उनसे राम करते हैं.[12] वर्षों से धैर्य ही तो धारण कर रहा हूं वह अपना द्वैधीभाव वासंती के समक्ष कह उठते हैं की ना मैं जी रहा हूं न मर रहा हूं हृदय फट रहा है किंतु दो खंडों में विभक्त नहीं हो रहा है मूर्छा आती है किंतु चेतना बनी रहती है अंतर्दाह शरीर को जला रहा है किंतु नष्ट नहीं कर रहा गुरु ब्रह्मा प्रहार तो करता है किंतु भस्मीभूत नहीं करता.

दलति हृदयं गाढोद्वेगं द्विधा तु न भिद्यते
वस्ति विकलः कारों मोहन ने मुञ्चति चेतनाम्।
ज्वलयति तनूमन्तर्दाहः क्योंकि न भस्मसात्
प्रहरति विधिर्मर्मच्छेदी न कृन्तति जीवितम्।[19]

भवभूति के राम का शोक भी बड़ा ही विचित्र प्रकार का है इसे किसी भी यत्न प्रयत्न से रोका नहीं जा सकता है। रावण द्वारा सीता हरण की पीड़ा से भी यह स्वयंकृत विरह पीड़ा भयावह है। उस वियोग के उपाय थे कुछ उद्योग थे अवधि थी और पीड़ा को बांटने वाले वीरों की सहायता थी किंतु इस वियोग में कुछ भी नहीं है कोई साथी नहीं है इसे अकेला ही चुपचाप सहन करना है।20 यह निरवधि और निरुपाय है। इस पीड़ा का विषम पक्ष यही है। एक मनोविज्ञानी के रूप में तमसा राम के विषय में कहती हैं कि राम का प्रलाप ही उनके शोक संतप्त हृदय की रक्षा कर सकता है क्योंकि तालाब की भर जाने पर पानी को निकाल देना ही एकमात्र उपाय बचता है।.

पुरोत्पीडे तटाकस्य परीवाहः प्रतिक्रिया।
शोकक्षेभे च हृदयं प्रलापैरेव धार्यते।।[21]

राम को सीता से पुनर्मिलन की लेश मात्र भी आशा नहीं है। वे केवल कल्पना द्वारा अपने मन में सीता का निर्माण कर के आश्वासन प्राप्त करते हैं किंतु कल्पना तो कल्पना ही है उसके निवृत्ति हो जाती है उस समय शोकाग्नि में उनका हृदय तिल तिल कर जलता है।[22] वे जानकी की सच्चरित्रता से परिचित नहीं थे ऐसी बात नहीं है परंतु लोक आराधना की वेदी पर अपने निजी सुख को तिलांजलि देना राम की कर्तव्यनिष्ठा का तथा आदर्श भूपतित्व का ज्वलंत दृष्टांत है। तृतीय अंक में राम वासंती के सामने अपने सच्चे भावों को प्रकट करने से विमुख नहीं होते वह लोक की निंदा भी भरपूर करते हैं। लोक के अस्त.व्यस्त अमर्यादित स्वरूप से वह भलीभांति परिचित हैं परंतु फिर भी उनकी कर्तव्यनिष्ठा लोग के अनुरंजनार्थ प्रियतम वस्तु का परित्याग करने के लिए बाध्य करती है। एक ओर राम अपने निजी जीवन के लिए व्यस्त हैं और दूसरी ओर प्रजानुरंजन उन्हें अपनी ओर आकृष्ट करता है। भावों के इस संघर्ष के कारण राम का हृदय टुकड़े. टुकड़े हो जाता है। राम और सीता का यह आदर्श चित्रण भवभूति की नाट्य कला का चरमावसान है।[23]
रूपक के इन सब प्रसंगों से प्रत्येक सामाजिक के मन में नायक के प्रति सहानुभूति उत्पन्न होती है और नायक के ऊपर युगों से लगा कलंक धुल जाता है। इस नाटक में करुण रस को प्रधानता देने से कवि का नायक का कलंकत्व मिटाने का संकल्प पूर्ण हो जाता है।

## संदर्भ


1. संस्कृत साहित्य का इतिहास देवर्षि कलानाथ शास्त्री पृष्ठ संख्या 174
2. उत्तररामचरितम्१२८
3. रामायण .१२३७
4. रघुवंशम् १४७०
5. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहासए आचार्य कपिल देव द्विवेदी पृ0 सं १११
6. आचार्य बलदेव उपाध्याय पृ0सं ५४६
7. उत्तररामचरितम् ११२
8. महावीर चरितम् १३३
9. महावीर चरितम् १३७
10. महावीर चरितम् ४५०
11. उत्तररामचरितम् ३४७
12. महावीर चरितम ५५४ ५५ ५६ ५८ ५९

13. संस्कृतसाहित्य का इतिहास डा. उमाशंकर शर्मा ऋषि पृष्ठ संख्या ५३३
14. उत्तररामचरितम् १२९
15. उत्तररामचरितम् १३०
16. उत्तररामचरितम् १४६
17. उत्तररामचरितम् ३२६
18. उत्तररामचरितम् ३१
19. उत्तररामचरितम् ३३१
20. उत्तररामचरितम् ३४४
21. उत्तररामचरितम् ३२९
22. उत्तररामचरितम् ६३८
23. आचार्य बलदेव उपाध्याय पृष्ठ संख्या. ५४८